Toppersnotes
Unleash the topper in you

CGPSC

State Civil Services

Chhattisgarh Public Service Commission

(Preliminary & Main)

पेपर - 5 भाग - 1

भारत और छत्तीसगढ़ की अर्थव्यवस्था

SIERRA INNOVATIONS

Chhattisgarh Public Service Commission

PRELIMS

पेपर - 1 भाग - 5

भारत और छत्तीसगढ़ की अर्थव्यवस्था

S.No.	Chapter Name	Page No.
1.	**भारतीय अर्थव्यवस्था का विकास** • ब्रिटिश शासन से पहले भारतीय अर्थव्यवस्था • ब्रिटिश शासन के दौरान भारतीय अर्थव्यवस्था • स्वतंत्रता के बाद की अर्थव्यवस्था • नियोजित और मिश्रित अर्थव्यवस्था	1
2.	**अर्थव्यवस्था के मूल सिद्धांत** • सूक्ष्म और स्थूल अर्थव्यवस्था • आर्थिक प्रणाली • अर्थव्यवस्था के क्षेत्र • माँग आपूर्ति प्रबंधन • आपूर्ति क्या है? • बाजार संतुलन • मांग और आपूर्ति में परिवर्तन का प्रभाव	5
3.	**राष्ट्रीय आय** • राष्ट्रीय आय के पहलू • राष्ट्रीय आय की गणना करने के तरीके • आर्थिक सांख्यिकी संबंधी स्थायी समिति	11
4.	**धन और पैसे की आपूर्ति** • धन का विकास • धन के कार्य • धन का वर्गीकरण • धन के प्रकार • क्रिप्टोकरेंसी और बिटकॉइन • मुद्रा आपूर्ति और मौद्रिक समुच्चय • वित्तीय प्रणाली • राष्ट्रीय मुद्रीकरण पाइपलाइन	16
5.	**मौद्रिक नीति** • मात्रात्मक उपकरण • गुणात्मक उपकरण • मौद्रिक नीति समिति	23
6.	**भारत में बैंकिंग** • वाणिज्यिक बैंकों का राष्ट्रीयकरण • भारतीय रिजर्व बैंक (RBI) • भारत में बैंकों का विभाजन	28

	• विशिष्ट बैंक • गैर-बैंकिंग वित्तीय संस्थान (NBFC) • NBFC के रूप में पंजीकरण करने की शर्तें • बैंकिंग क्षेत्र में सुधार • दिवाला और दिवालियापन • सार्वजनिक क्षेत्र के बैंकों में सुधार के लिए मिशन इंद्रधनुष • वित्तीय समावेशन • स्वर्ण निवेश योजनाएं	
7.	**मुद्रास्फीति और व्यापार चक्र** • मुद्रास्फीति के कारण • मुद्रास्फीति के प्रकार • WPI बनाम CPI • उत्पादक मूल्य सूचकांक(PPI) • आवास मूल्य सूचकांक • सेवा मूल्य सूचकांक (SPI) • मुद्रास्फीति लक्ष्यीकरण • मुद्रास्फीति के प्रभाव • व्यापारिक चक्र • आर्थिक सुधार	**48**
8.	**भारत में बेरोजगारी** • भारत में बेरोजगारी का उपाय • भारत में बेरोज़गारी के प्रकार • भारत में बेरोज़गारी के कारण • बेरोज़गारी का प्रभाव • सरकार की पहल	**56**
9.	**गरीबी** • गरीबी के प्रकार • भारत में गरीबी का आकलन • गरीबी के आकलन के लिए विभिन्न समितियों की अनुशंसाएं • रंगराजन समिति • भारत में गरीबी के कारण • भारत में गरीबी उन्मूलन कार्यक्रम • बहुआयामी निर्धनता सूचकांक	**60**
10.	**भारत में वित्तीय बाज़ार** • मुद्रा बाजार • पूंजी बाजार • वित्तीय विनियमन • विभिन्न नियामक • केन्द्रीय मंत्रालय • कुछ वित्तीय मध्यस्थों के लिए विशेष क़ानून	**65**
11.	**भारत में प्रतिभूति बाजार** • प्राथमिक और द्वितीयक बाजार • शेयर बाजार	**71**

	• राष्ट्रीय स्तर के विभिन्न स्टॉक एक्सचेंज • स्टॉक एक्सचेंजों में खिलाड़ी • भारतीय सुरक्षा और विनिमय बोर्ड (सेबी) • उत्पाद व्यवसाय • स्पॉट एक्सचेंज • शेयर बाजार की महत्वपूर्ण शब्दावली • विदेशी वित्तीय निवेश • सहभागी नोट (पी-नोट्स, या पीएन) • बचाव निधि (Hedge Fund) • क्रेडिट डिफ़ॉल्ट स्वैप (CDS) • प्रतिभूतिकरण(Securitization) • भारत में कॉरपोरेट बॉन्ड • गोल्ड एक्सचेंज ट्रेडेड फंड्स • केंद्रीय सार्वजनिक क्षेत्र के उद्यम- एक्सचेंज ट्रेडेड फंड (सीपीएसई ईटीएफ) • पेंशन क्षेत्र में सुधार • अचल संपत्ति और बुनियादी ढांचा निवेश ट्रस्ट	
12.	**बाहरी क्षेत्र और भुगतान संतुलन** • भुगतान का संतुलन • मुद्रा प्रकार • विदेशी निवेश • बाह्य वाणिज्यिक उधार (ECB) • व्यापार संवर्धन • निर्यात प्रोत्साहन योजनाएं • नई विदेश व्यापार नीति 2021-2026 • बैंकिंग पूंजी लेनदेन • मुद्रा परिवर्तनीयता • विदेशी कर्ज • भारत में विनिमय दर प्रबंधन • व्यापार संतुलन	**81**
13.	**अंतर्राष्ट्रीय आर्थिक संस्थान** • ब्रेटन वुड्स सम्मेलन 1944 • अंतर्राष्ट्रीय मुद्रा कोष • विश्व बैंक • अन्य वस्तु व्यापार समझौते • भारत और विश्व व्यापार संगठन • एशियन इन्फ्रास्ट्रक्चर इन्वेस्टमेंट बैंक • एशियाई विकास बैंक • आर्थिक सहयोग और विकास संगठन (OECD)	**95**
14.	**भारतीय सार्वजनिक वित्त** • सार्वजनिक राजस्व • सरकारी व्यय • सार्वजनिक ऋण • राजकोषीय नीति	**106**

	• राजकोषीय नीति बनाम मौद्रिक नीति • घाटा • राजकोषीय घाटे को नियंत्रित करने के उपाय • सार्वजनिक ऋण	
15.	**बजट बनाना** • वार्षिक वित्तीय विवरण (बजट) • बजट के अधिनियमन की प्रक्रिया • भौतिक और वित्तीय पूंजी और बुनियादी ढांचा: • सरकारी खाते • घाटा वित्तपोषण	**114**
16.	**कराधान** • कराधान के पीछे उद्देश्य • कराधान के तरीके • कर के प्रकार • कर सुधार • राजा चेलिया समिति • केंद्र से राज्यों को फंड ट्रांसफर • कराधान में महत्वपूर्ण शर्तें • लाफ़र वक्र • अंतर्राष्ट्रीय कर संधियाँ	**118**
17.	**अनुदान** • कृषि अनुदान की आवश्यकता • अनुदानों का वर्गीकरण • संवितरण के विभिन्न तरीके • भारतीय खाद्य निगम (FCI) • राष्ट्रीय खाद्य सुरक्षा अधिनियम, 2013 • विश्व व्यापार संगठन और कृषि अनुदान	**131**
18.	**बुनियादी ढाँचा** • अवसंरचना विकास • उदय (उज्ज्वल डिस्कॉम एश्योरेंस योजना) योजना। • व्यवहार्यता गैप फंडिंग (VGF) • सड़कें • भारतमाला परियोजना • रेलवे • बंदरगाह • हवाई अड्डे • औद्योगिक गलियारे • विशेष आर्थिक क्षेत्र (SEZs) • मल्टी मोडल लॉजिस्टिक्स पार्क • बिजली क्षेत्र • तेल और गैस क्षेत्र • ऊर्जा सुरक्षा • स्मार्ट सिटी, कायाकल्प और शहरी परिवर्तन के लिए अटल मिशन (अमृत)	**135**

	• सभी के लिए आवास • एनआईआईएफ (राष्ट्रीय निवेश और बुनियादी ढांचा कोष) • राष्ट्रीय अवसंरचना पाइपलाइन	
19.	**निवेश मॉडल** • स्रोत • निवेश मॉडल के प्रकार	**149**
20.	**उद्योग** • 1991 से पहले की औद्योगिक नीति • 1991 के बाद की औद्योगिक नीति • विनिवेश के प्रकार • व्यापार सुगमता • औद्योगिक विकास के चरण • सूक्ष्म, लघु और मध्यम उद्यम (MSME) • सीमित देयता भागीदारी (LLP) अधिनियम, 2008: • खादी और ग्रामोद्योग आयोग (KVIC) • क्षेत्रीय चिंताएं • स्टार्ट-अप इंडिया	**151**
21.	**आपूर्ति श्रृंखला और खाद्य प्रसंस्करण** • खाद्य प्रसंस्करण उद्योग (FPI) • आपूर्ति श्रृंखला योजनाएं • आपूर्ति श्रृंखला अवसंरचना • खाद्य सुरक्षा और मानक अधिनियम 2006 और भारतीय खाद्य सुरक्षा और मानक प्राधिकरण (FSSAI)	**162**
22.	**भारत में भूमि सुधार** • भूमि सुधार के लिए तर्क • भूमि सुधार के घटक • भूमि सुधारों का प्रभाव • भूमि सुधार • भूमि अधिग्रहण अधिनियम 2013 • भूमि सुधारों के कार्यान्वयन में समस्याएं • सामाजिक प्रभाव आकलन	**167**
23.	**आर्थिक सुधार** • 1991 आर्थिक संकट • 1991 के सुधार • भारत में आर्थिक सुधार • सुधार के उपाय • आर्थिक सुधारों की पीढ़ी • मिश्रित अर्थव्यवस्था	**174**
24.	**भारत में योजना** • स्थानीय योजना • राष्ट्रीय योजना • योजना के प्रकार • योजना के प्रमुख उद्देश्य	**179**

	• भारत में योजना का विकास • राष्ट्रीय विकास परिषद • पंचवर्षीय योजनाएं • NITI (नीति) आयोग	
25.	**बीमा** • भारतीय जीवन बीमा निगम (LICI) • भारतीय सामान्य बीमा निगम (GIC) • भारतीय कृषि बीमा कंपनी लिमिटेड (AICIL) • बीमा नियामक और विकास प्राधिकरण (IRDA)। • पुनर्बीमा • जमा बीमा और ऋण गारंटी निगम • क्रेडिट गारंटी फंड • एक्सपोर्ट क्रेडिट गारंटी कॉर्पोरेशन ऑफ इंडिया लिमिटेड (ECGC) • राष्ट्रीय निर्यात बीमा खाता (NEIA) • बीमा प्रवेश और सघनता • नीतिगत पहल • नई बीमा योजनाएं	**186**
26.	**वृद्धि, विकास और खुशहाली** • आर्थिक संवृद्धि • आर्थिक विकास को प्रभावित करने वाले कारक • आर्थिक विकास • असमानता • खुशहाली • समावेशी वृद्धि और संबंधित मुद्दे • भारत में निर्धनता आकलन • जनसांख्यिकीय विभाजन • भारत में श्रम कानून • औपचारिक और अनौपचारिक अर्थव्यवस्था • सतत विकास लक्ष्य (SDGs)	**191**
27.	**कृषि** • पंचवर्षीय योजनाओं के तहत कृषि का विकास • कृषि एवं हरित क्रांति • भूमि उपयोग से संबंधित शर्तें • कृषि विपणन • सार्वजनिक वितरण प्रणाली • निवेश प्रबंधन योजनाएं/मिशन • जल प्रबंधन-सूक्ष्म सिंचाई • त्वरित सिंचाई लाभ कार्यक्रम • कृषि साख • खाद्य सुरक्षा • उत्पादन प्रबंधन योजनाएं • न्यूनतम समर्थन मूल्य (एमएसपी) • प्रधानमंत्री आशा (प्रधानमंत्री अन्नदाता आय संरक्षण अभियान)	**203**

	• उत्पादन प्रबंधन योजनाएँ • आवश्यक वस्तु अधिनियम, 1955 • कृषि निर्यात नीति 2018 • मूल्य स्थिरीकरण के उपाय • कृषि प्रसंस्करण क्लस्टर • कृषि में विस्तार प्रबंधन • कृषि विस्तार के लिए जनसंचार माध्यमों का समर्थन • संबद्ध गतिविधियों का प्रबंधन-अतिरिक्त आय अर्जित करना	
28.	**छत्तीसगढ़ की अर्थव्यवस्था**	**226**

प्रिय विद्यार्थी, टॉपर्सनोट्स चुनने के लिए धन्यवाद।

नोट्स में दिए गए QR कोड्स को स्कैन करने लिए टॉपर्स नोट्स ऐप डाउनलोड करे ।

ऐप डाउनलोड करने के लिए दिशा निर्देश देखे :-

ऐप इनस्टॉल करने के लिए आप अपने मोबाइल फ़ोन के कैमरा से या गूगल लेंस से QR स्कैन करें ।

टॉपर्सनोट्स एग्जाम प्रिपरेशन ऐप

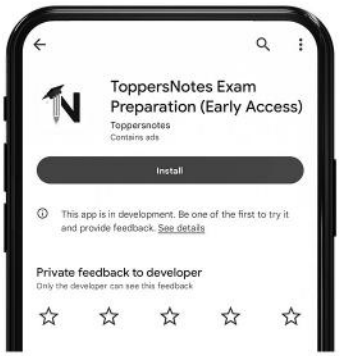

टॉपर्सनोट्स ऐप डाउनलोड करें गूगल प्ले स्टोर से ।

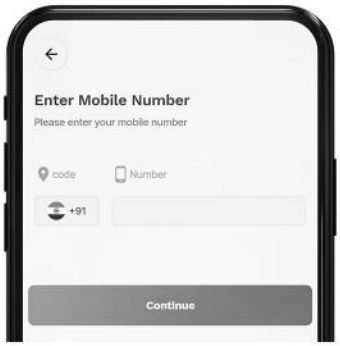

लॉग इन करने के लिए अपना **मोबाइल नंबर** दर्ज करें ।

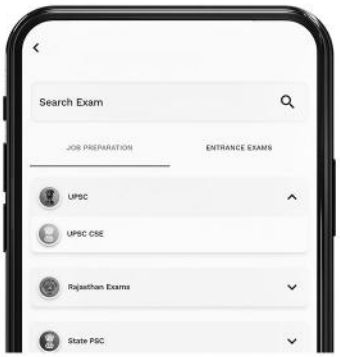

अपनी **परीक्षा श्रेणी** चुनें ।

सर्च बटन पर क्लिक करें ।

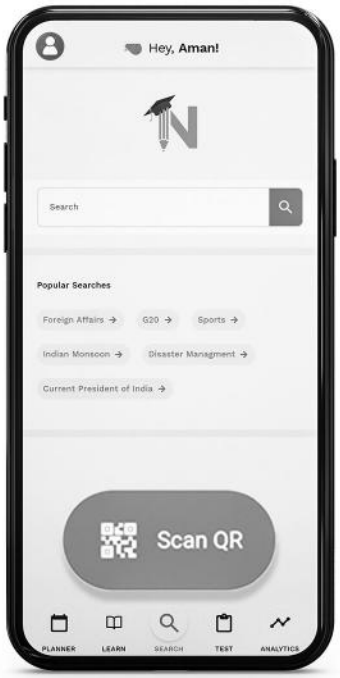

SCAN QR पर क्लिक करें ।

किताब के **QR कोड को स्कैन** करें ।

किसी भी तकनीकी सहायता के लिए
hello@toppersnotes.com पर मेल करें
या **766 56 41 122** पर whatsapp करें ।

1 CHAPTER भारतीय अर्थव्यवस्था का विकास

स्वतंत्रता पूर्व अवधि	• उत्पादन या उत्पादकता स्तरों की संरचना में थोड़े से बदलाव के साथ, लगभग ठहराव की अवधि।
1930 के दशक के मध्य	• राष्ट्रीय योजना समिति 1938 में अंग्रेजों द्वारा बनाई गई थी जिन्होंने भारत में आर्थिक नियोजन की आवश्यकता को देखा। • भारत एक विदेशी देश, यूनाइटेड किंगडम के लाभ के लिए विकास का अनुसरण कर रहा था।
स्वतंत्रतापूर्व संध्या पर भारत की आर्थिक रूपरेखा	• औपनिवेशिक अर्थव्यवस्था का एक उत्कृष्ट परिदृश्य पूरी तरह अस्त-व्यस्त था। • कृषि और विनिर्माण दोनों में मूलभूत समस्याएँ थीं, जिसमें सरकार केवल एक न्यूनतम भूमिका निभा रही थी।

ब्रिटिश शासन से पहले भारतीय अर्थव्यवस्था

- **प्रकार:** स्वतंत्र अर्थव्यवस्था थी।
- **कृषि:** अधिकांश लोगों की आजीविका का मुख्य स्रोत
  - विभिन्न प्रकार की विनिर्माण गतिविधियों की विशेषता वाली अर्थव्यवस्था।
  - **उदाहरण:** सूती और रेशमी वस्त्रों के क्षेत्र में हस्तशिल्प उद्योग।
  - धातु और कीमती पत्थर के काम आदि।
- **बंगाल:** वस्त्र उद्योग के लिए विशेष रूप से प्रसिद्ध - मलमल का कपड़ा
- भारतीय उत्पादों में इस्तेमाल की गई सामग्री की अच्छी गुणवत्ता और यहाँ से अधिकांश आयातों में देखे जाने वाले शिल्प कौशल के उच्च मानकों के लिए दुनिया भर में प्रतिष्ठा मिली।

ब्रिटिश शासन के दौरान भारतीय अर्थव्यवस्था

कृषि क्षेत्र	• अर्थव्यवस्था का प्रकार: मूल रूप से कृषि प्रधान
	• लोगों की भागीदारी: देश की लगभग 85% आबादी प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष रूप से कृषि से आजीविका प्राप्त करती थी।
	• कृषि उत्पादकता कम हो गई, खेती के तहत कुल क्षेत्र के विस्तार के कारण इस क्षेत्र में कुछ वृद्धि हुई।
	• कृषि क्षेत्र में स्थिरता के कारण
	  ○ अंग्रेजों द्वारा शुरू की गई भूमि बंदोबस्त प्रणाली: बंगाल में लागू की गई ज़मींदारी प्रणाली ने कृषि क्षेत्र से होने वाले लाभ को काश्तकारों के बजाय जमींदारों को दे दिया।
	  ○ प्रौद्योगिकी का निम्न स्तर।
	  ○ सिंचाई की सुविधा का अभाव।
	  ○ उर्वरकों का नगण्य उपयोग।
	• नकदी फसलों की खेती में वृद्धि: कृषि के व्यावसायीकरण के कारण नकदी फसलों की अपेक्षाकृत अधिक उपज।
	• ब्रिटिश नीति का शायद ही कोई उपयोग था क्योंकि खाद्य फसलों के उत्पादन के बजाय, नकदी फसलों का उत्पादन किया गया था, जिनका उपयोग अंततः इंग्लैंड में लगे औद्योगिक कारखानों में किया जाता था।
	• सिंचाई के क्षेत्र में कुछ प्रगति हुई, लेकिन भारत की कृषि में सीढ़ीदार, बाढ़ नियंत्रण, जल निकासी और मिट्टी के विलवणीकरण में निवेश की कमी थी।

औद्योगिक क्षेत्र	• औपनिवेशिक शासन में भारत एक सुदृढ़ औद्योगिक आधार विकसित नहीं कर सका।
	• देश के हस्तशिल्प उद्योगों में गिरावट आई और कोई आधुनिक औद्योगिक आधार विकसित नहीं हो सका।
	• नीति के पीछे ब्रिटेन का उद्देश्य:
	  ○ ब्रिटेन में विकसित होने वाले आधुनिक उद्योगों के लिए भारत को महत्वपूर्ण कच्चे माल का निर्यातक बनाना चाहते थे।
	  ○ उन उद्योगों के तैयार उत्पादों के लिए भारत को एक विशाल बाजार में बदलना ताकि उनका निरंतर विस्तार उनके गृह देश ब्रिटेन के अधिकतम लाभ के लिए सुनिश्चित किया जा सके।
	• नीतियों का प्रभाव
	  ○ हस्तशिल्प उद्योग की गिरावट के कारण भारी बेरोजगारी

	○ भारतीय उपभोक्ता बाजार में माँग स्थानीय रूप से निर्मित वस्तुओं की आपूर्ति से वंचित थी जिसके कारण ब्रिटेन से सस्ते विनिर्मित वस्तुओं के आयात में वृद्धि हुई। ○ आधुनिक उद्योग की शुरुआत: उन्नीसवीं सदी के उत्तरार्ध के दौरान, आधुनिक उद्योग ने भारत में जड़ें जमाना शुरू कर दिया लेकिन इसकी प्रगति बहुत धीमी रही। ○ सूती वस्त्र मिलें: भारतीयों का वर्चस्व ■ स्थान: महाराष्ट्र और गुजरात, ○ जूट मिलें: विदेशियों का प्रभुत्व ■ स्थान: बंगाल ○ लौह और इस्पात उद्योग: 20वीं सदी की शुरुआत में आए। ■ 1907: टाटा आयरन एंड स्टील कंपनी (टिस्को) की स्थापना हुई। ○ अन्य उद्योग: द्वितीय विश्वयुद्ध के बाद चीनी, सीमेंट, कागज आदि उद्योगों का उदय हुआ।
विदेशी व्यापार	• अंग्रेजों द्वारा उत्पादन, व्यापार और शुल्क की प्रतिबंधात्मक नीतियों ने भारत के विदेशी व्यापार का ढाँचा, संरचना और मात्रा पर प्रतिकूल प्रभाव डाला। • अंग्रेजों ने भारत के आयात और निर्यात पर एकाधिकार बनाए रखा। • औपनिवेशिक काल के दौरान बड़े पैमाने पर निर्यात अधिशेष उत्पन्न हुआ था • उनकी नीतियों का प्रभाव: भारत कच्चे उत्पाद रेशम, कपास, ऊन, चीनी, नील, जूट आदि जैसे प्राथमिक उत्पादों का निर्यातक बन गया और ब्रिटिश कारखानों में बनी हल्की मशीनरी व सूती, रेशमी, ऊनी वस्त्रों जैसी वस्तुओं का आयातक बनकर रह गया। • स्वेज नहर के खुलने से भारत के विदेशी व्यापार पर ब्रिटिश नियंत्रण और तेज हो गया।

	• निर्यात अधिशेष उत्पादन ने देश की अर्थव्यवस्था को बुरी तरह से प्रभावित किया। • कई आवश्यक वस्तुएँ जैसे खाद्यान्न, कपड़े, मिट्टी का तेल आदि की घरेलू बाजार में उपलब्धता कम हो गई। • इसके परिणामस्वरूप भारत में सोने या चाँदी का कोई प्रवाह नहीं हुआ, बल्कि इसका उपयोग ब्रिटेन में औपनिवेशिक सरकार द्वारा स्थापित एक कार्यालय द्वारा किए गए खर्चों के भुगतान के लिए किया जाता था व अंग्रेजों द्वारा लड़े गए युद्ध पर खर्च किया जाता था। • इन सब के कारण भारतीय धन की निकासी हुई।
जनसांख्यिकीय दशा	• पहली जनगणना: 1881 • भारत की जनसंख्या वृद्धि में असमानता थी। • 1921 तक भारत जनसांख्यिकीय संक्रमण के पहले चरण में था। • 1921 के बाद संक्रमण का दूसरा चरण शुरू हुआ। • इस स्तर पर न तो भारत की कुल जनसंख्या और न ही जनसंख्या वृद्धि की दर बहुत अधिक थी। • सामाजिक विकास संकेतक: ○ समग्र साक्षरता स्तर: 16% से कम ○ महिला साक्षरता स्तर: 7% ○ जनसंख्या के बड़े हिस्से तक सार्वजनिक स्वास्थ्य सुविधाओं का अभाव था। ○ जल और वायु जनित रोग बड़े पैमाने पर थे। ○ कुल मृत्यु दर बहुत अधिक थी। ○ शिशु मृत्यु दर: 218 प्रति हजार जबकि वर्तमान शिशु मृत्यु दर 33 प्रति हजार है। ○ जीवन प्रत्याशा: 32 वर्ष वर्तमान 69 वर्षों के विपरीत। • व्यापक गरीबी: उस समय की भारत की जनसंख्या की दशा और ख़राब हो गई।
व्यावसायिक संरचना	• कृषि क्षेत्र: कार्यबल का सबसे बड़ा हिस्सा 70-75% के उच्च स्तर पर बना रहा।

	• विनिर्माण क्षेत्र: कार्यबल के 10% हिस्से को रोजगार मिल पा रहा था। • सेवा क्षेत्र: इसमें कार्यबल का 15-20% हिस्सा शामिल था। • क्षेत्रीय भिन्नता का विकास: तत्कालीन मद्रास प्रेसीडेंसी, बॉम्बे और बंगाल के कुछ हिस्सों में कृषि क्षेत्र पर श्रमबल की निर्भरता में गिरावट देखी गई, साथ ही विनिर्माण और सेवा क्षेत्रों में वृद्धि हुई। • उड़ीसा, राजस्थान और पंजाब जैसे राज्यों में एक ही समय के दौरान कृषि में कार्यबल की हिस्सेदारी में वृद्धि हुई।
आधारिक संरचना	• रेलवे, बंदरगाह, जल परिवहन, डाक और तार जैसी सुविधाओं हेतु बुनियादी ढाँचे का विकास हुआ। • सड़कें: ब्रिटिश शासन के आगमन से पहले भारत में निर्मित सड़कें आधुनिक परिवहन के लिए उपयुक्त नहीं थी अर्थात नई सड़कों का निर्माण किया गया। ○ उद्देश्य: भारत के भीतर सेना को संगठित करने और ग्रामीण इलाकों से कच्चे माल को निकटतम रेलवे स्टेशन या बंदरगाह तक पहुँचाने के लिए इन्हें दूर इंग्लैंड या अन्य आकर्षक विदेशी गंतव्यों में भेजने के लिए। • रेलवे: अंग्रेजों द्वारा 1850 में भारत में शरू की गई और इसे उनके सबसे महत्वपूर्ण योगदानों में से एक माना जाता है। ○ भारतीय अर्थव्यवस्था पर प्रभाव: ○ इसने लोगों को लंबी दूरी की यात्रा करने और भौगोलिक और सांस्कृतिक बाधाओं को कम में सक्षम बनाया। ○ इसने भारतीय कृषि के व्यावसायीकरण को बढ़ावा दिया जिसने भारत में ग्रामीण अर्थव्यवस्थाओं की आत्मनिर्भरता पर प्रतिकूल प्रभाव डाला। ○ भारत के निर्यात की मात्रा में निस्संदेह विस्तार हुआ लेकिन इसका लाभ शायद ही कभी भारतीय लोगों को मिला हो। ○ रेलवे की शुरुआत के कारण भारतीय लोगों को जो सामाजिक लाभ मिला, वह देश के भारी आर्थिक नुकसान से कहीं अधिक था। • अंतर्देशीय व्यापार और समुद्री मार्ग ○ अंग्रेजों के ये उपाय संतोषजनक नहीं थे। ○ अंतर्देशीय जलमार्ग भी अलाभकारी साबित हुए जैसे उड़ीसा तट पर तटवर्ती नहर के मामले में। • टेलीग्राफ सिस्टम: भारत में विकसित टेलीग्राफ की महंगी प्रणाली की शुरूआत ने कानून और व्यवस्था बनाए रखने के उद्देश्य की पूर्ति की। • डाक सेवाएँ : उपयोगी सार्वजनिक उद्देश्य की पूर्ति के बावजूद अपर्याप्त बनी रहीं।

स्वतंत्रता के बाद की अर्थव्यवस्था

1950	• आर्थिक विकास की एक विशेष रणनीति को अपनाना। ○ तेजी से औद्योगीकरण: केंद्र द्वारा तैयार पंचवर्षीय योजना को लागू करना। ○ इस प्रक्रिया में भारी मात्रा में संसाधन जुटाना और उन्हें बड़े औद्योगिक राज्य के स्वामित्व वाले उद्यमों के निर्माण में निवेश करना निहित था। • चुने गए उद्योग: स्टील, रसायन, मशीन और उपकरण, इंजन, बिजली। • सार्वजनिक उद्यमों के निर्माण के लिए निवेश का निर्देश दिया गया। • लक्ष्य: सार्वजनिक स्वामित्व के तहत उत्पादक संसाधनों के एक बड़े हिस्से को लाने के लिए लोकतांत्रिक तरीकों का उपयोग करके "समाज के समाजवादी पैटर्न" की स्थापना करना। • स्वतंत्र भारत में नियोजित और मिश्रित अर्थव्यवस्था थी।

नियोजित और मिश्रित अर्थव्यवस्था

योजनाबद्ध या समाजवादी अर्थव्यवस्था	मिश्रित आर्थिक प्रणाली

• एक आर्थिक प्रणाली जहाँ सरकार वस्तुओं और सेवाओं के उत्पादन और मूल्य निर्धारण को नियंत्रित करती है।
• कभी-कभी इसे कमांड इकोनॉमी के रूप में जाना जाता है।
• सरकार फैसला करती है :
  ○ किन वस्तुओं और सेवाओं का उत्पादन करना है,
  ○ उत्पादन और वितरण विधि,
  ○ वस्तुओं और सेवाओं की कीमतें
• सरकार : केंद्रीय योजनाकार, नियामक और नियंत्रक।
• उदाहरण : उत्तर कोरिया, ईरान, लीबिया और क्यूबा।
• चीन में एक कमांड अर्थव्यवस्था थी।
  ○ साम्यवादी और पूंजीवादी दोनों आदर्शों वाली मिश्रित अर्थव्यवस्था की ओर मुड़ने से पहले।
	• कमांड और फ्री-मार्केट सिस्टम दोनों की विशेषताएँ।
	• आंशिक रूप से सरकार द्वारा नियंत्रित और आंशिक रूप से ही मांग और आपूर्ति की शक्तियों पर आधारित।
	• दुनिया की अधिकांश महत्वपूर्ण अर्थव्यवस्थाएँ अब मिश्रित अर्थव्यवस्थाएँ हैं,
	  ○ समाजवाद और पूंजीवाद के संयोजन के तहत संचालित,
	  ○ राजकोषीय या मौद्रिक नीतियों का उपयोग
	  ○ आर्थिक मंदी के दौरान विकास को प्रोत्साहित करने के लिए
	• मिश्रित आर्थिक प्रणाली में सार्वजनिक और निजी क्षेत्र निहित हैं।
	• एक मिश्रित अर्थव्यवस्था में सीमित सरकारी विनियमन।

2 CHAPTER अर्थव्यवस्था के मूल सिद्धांत

सूक्ष्म और स्थूल अर्थव्यवस्था

सूक्ष्म अर्थव्यवस्था	स्थूल अर्थव्यवस्था
• व्यक्तिगत और व्यावसायिक निर्णयों का अध्ययन किया जाता है। माँग और आपूर्ति, साथ ही अन्य कारक जो मूल्य स्तरों को प्रभावित करते हैं। • संभावित निवेशकों द्वारा निर्णय लेने के लिए इस्तेमाल किया जा सकता है। • एक स्वस्थ अर्थव्यवस्था के लिए आवश्यक वस्तुओं और सेवाओं को दर्शाता है। • यह भविष्यवाणी भी करता है कि भविष्य में किन वस्तुओं और सेवाओं की अत्यधिक माँग होगी। • प्रोफेसर राग्नार फ्रिस्क ने सूक्ष्मअर्थशास्त्र शब्द दिया।	• इस बात का अध्ययन करता है कि देश और सरकारें व्यावसायिक निर्णय कैसे लेते हैं। • अर्थव्यवस्था की दिशा और प्रकृति को समझने के लिए ऊपर से नीचे तक पूरी खोज करती है। • आर्थिक और राजकोषीय नीति का विश्लेषण करने की एक विधि है। • सुनिश्चित करती है कि देश के आर्थिक संसाधनों का उपयोग उनकी पूरी क्षमता के लिए किया जाता है या नहीं। • जॉन मेनार्ड कीन्स को आम तौर पर समकालीन समष्टि आर्थिक सिद्धांत का जनक माना जाता है।

आर्थिक प्रणाली

- संसाधनों को आवंटित करने और पूरे देश में वस्तुओं और सेवाओं को वितरित करने के लिए संस्थागत व्यवस्थाओं और समन्वय तंत्र का समूह

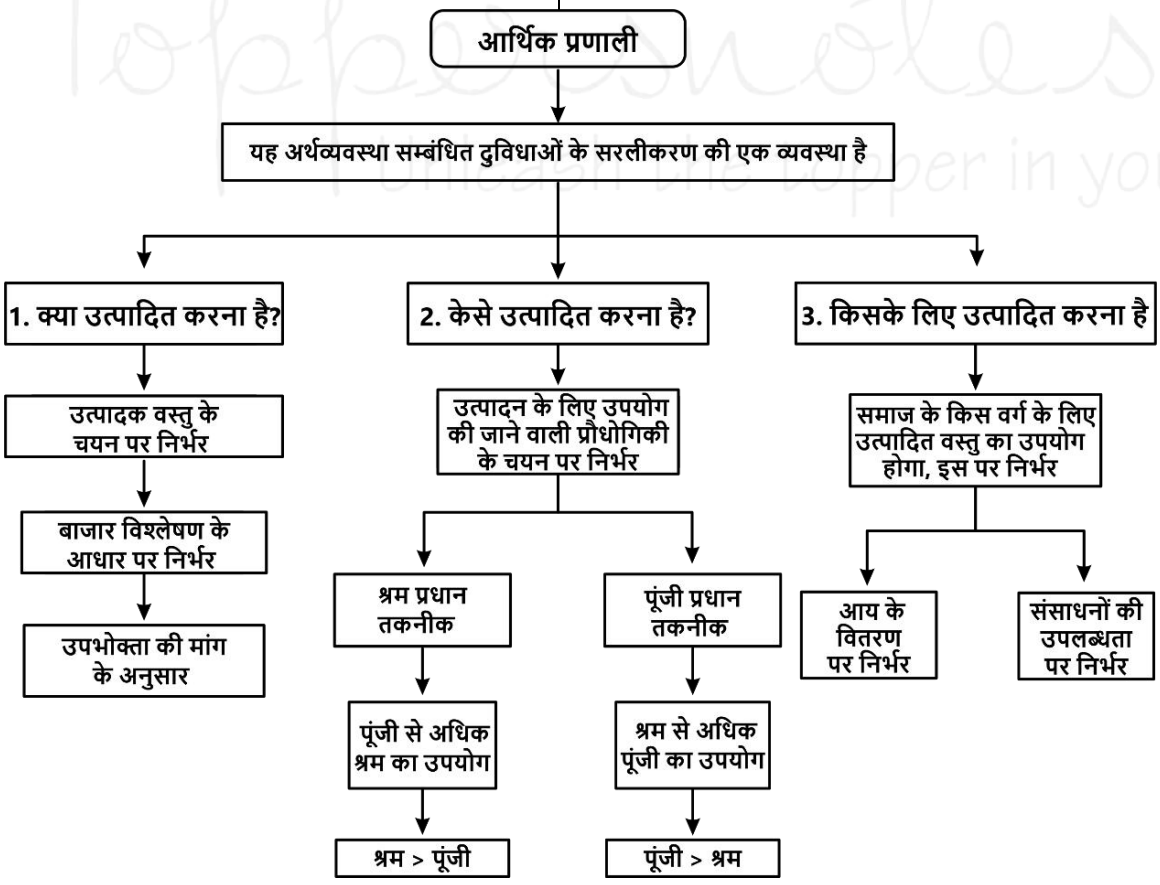

विभिन्न आर्थिक प्रणालियाँ

पूँजीवादी अर्थव्यवस्था	• एक पूँजीवादी अर्थव्यवस्था में उत्पन्न उत्पादों को व्यक्तियों के बीच वस्तुओं और सेवाओं को खरीदने की क्षमता के आधार पर वितरित किया जाता है, बजाय इसके कि वे क्या चाहते हैं। • उत्पादों और सेवाओं को खरीदने के लिए व्यक्ति के पास पर्याप्त धन होना चाहिए। • माँग के बावजूद क्रय शक्ति की कमी के कारण माल का उत्पादन नहीं हो सकता है।
समाजवादी अर्थव्यवस्था	• सरकार तय करती है कि क्या, कैसे और किसके लिए उत्पाद बनाया जाए। • व्यक्तिगत खरीददारों पर ज्यादा ध्यान नहीं दिया जाता। • सिद्धांत रूप में समाजवाद के तहत साझा करना इस आधार पर होता है कि प्रत्येक व्यक्ति को क्या चाहिए, न कि वह जो वहन कर सकता है। • समाजवादी शासन में कोई अलग संपत्ति नहीं।
मिश्रित अर्थव्यवस्था	• अर्थव्यवस्था कभी भी स्थायी रूप से राज्य के हस्तक्षेप या मुक्त बाजार की ओर नहीं झुकी बल्कि अर्थव्यवस्था की सामाजिक-आर्थिक स्थिति की आवश्यकताओं के अनुसार हमेशा राज्य और बाजार का संतुलित मिश्रण रही।

पूंजीवादी, समाजवादी और मिश्रित अर्थव्यवस्थाओं में अंतर

मापदंड	पूँजीवादी अर्थव्यवस्था	समाजवादी अर्थव्यवस्था	मिश्रित अर्थव्यवस्था
स्वामित्व	निजी	सार्वजनिक	सार्वजनिक और निजी दोनों
मूल्य निर्धारण	बाजार की ताकतों से	केंद्रीय नियोजन प्राधिकरण द्वारा।	केंद्रीय योजना प्राधिकरण और बाजार शक्तियों द्वारा
उत्पादन का उद्देश्य	लाभ कमाना	सामाजिक कल्याण	निजी क्षेत्र में लाभ और सार्वजनिक क्षेत्र में कल्याण
सरकार की भूमिका	कोई भूमिका नहीं	पूर्ण नियंत्रण में	सार्वजनिक क्षेत्र में पूर्ण भूमिका और निजी क्षेत्र में सीमित
प्रतिस्पर्द्धा	मौजूद	कोई प्रतियोगिता नहीं	केवल निजी क्षेत्र में
आय वितरण	बहुत असमान	बिल्कुल बराबर	काफ़ी असमानताएँ मौजूद होती हैं

अर्थव्यवस्था के क्षेत्र

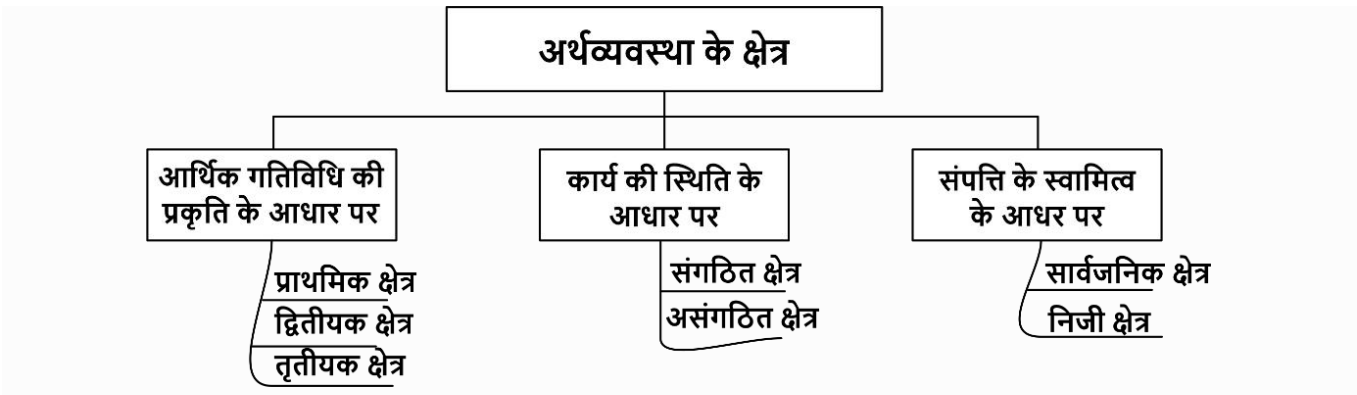

छत्तीसगढ़ अर्थव्यवस्था

छत्तीसगढ़ अर्थव्यवस्था

छत्तीसगढ़ की जनसांख्यिकी

छत्तीसगढ़ भारत के मध्य भाग में एक राज्य है और 1 नवंबर, 2000 को मध्य प्रदेश राज्य से अलग किया गया था। दक्षिण पूर्व मध्य प्रदेश के क्षेत्रों को इस नए राज्य में शामिल किया गया था, जो देश में इस्पात उत्पादन का 15% हिस्सा है। राज्य की सीमा महाराष्ट्र, आंध्र प्रदेश, उड़ीसा और उत्तर प्रदेश से लगती है। यह झारखंड राज्य के साथ अपनी सीमा भी साझा करता है जिसे छत्तीसगढ़ के रूप में उसी दिन बनाया गया था। राज्य में उष्णकटिबंधीय जलवायु है और छत्तीसगढ़ी राज्य में बोली जाने वाली मुख्य भाषा है। रायपुर शहर राज्य का सबसे प्रमुख शहर है और यहां एक लोकप्रिय घरेलू हवाई अड्डा है। छत्तीसगढ़ जनगणना 2011 राज्य के बारे में सबसे महत्वपूर्ण आँकड़ों पर प्रकाश डालती है।

2011 की जनगणना के अनुसार छत्तीसगढ़ की जनसंख्या लगभग 25 मिलियन है, जिससे यह भारत का 16वां सबसे अधिक आबादी वाला राज्य बन गया है। राज्य वर्ष 2000 में अस्तित्व में आया और मध्य प्रदेश से बना था। राज्य लगभग 135000 वर्ग km के क्षेत्र में फैला हुआ है। क्षेत्रफल की दृष्टि से यह देश का 7वां सबसे बड़ा राज्य है। जनसंख्या का घनत्व प्रति वर्ग km. 191 के आसपास है और राष्ट्रीय औसत से काफी नीचे है। राज्य की विकास दर लगभग 22% है जो राष्ट्रीय विकास दर लगभग 17% से अधिक है। विकास और प्रगति की दिशा में तेजी से किए जा रहे प्रयासों के कारण राज्य की जनसंख्या में काफी वृद्धि हो रही है। राज्य में साक्षरता दर लगभग 73% है, जो कि सरकार के लगातार प्रयासों के कारण पिछले कुछ वर्षों में जबरदस्त सुधार हुआ है। छत्तीसगढ़ में लिंगानुपात लगभग 990 है जो एक स्वस्थ आंकड़ा है और कई अन्य राज्यों से ऊपर है। छत्तीसगढ़ जनगणना 2011 के आँकड़े उन तथ्यों को प्रकट करते हैं जो राज्य के लिए एक बेहतर विकास योजना की योजना बनाने में सहायक हो सकते हैं।

राजधानी शहर जो छत्तीसगढ़ राज्य का सबसे बड़ा शहर भी है, रायपुर है। छत्तीसगढ़ राज्य में बोली जाने वाली भाषाओं में छत्तीसगढ़ी और हिंदी शामिल हैं। कुल छत्तीसगढ़ (CG) राज्य में 18 जिले शामिल हैं। छत्तीसगढ़ राज्य के लिए अंतर्राष्ट्रीय मानकीकरण संगठन द्वारा सौंपा गया ISOCODE CG है।

छत्तीसगढ़ जनसंख्या 2011

2011 की जनगणना के विवरण के अनुसार, छत्तीसगढ़ की जनसंख्या 2.56 करोड़ है, जो 2001 की जनगणना में 2.08 करोड़ के आंकड़े से अधिक है। 2011 की जनगणना के अनुसार छत्तीसगढ़ की कुल जनसंख्या 25,545,198 है, जिसमें पुरुष और महिला क्रमश: 12,832,895 और 12,712,303 हैं। 2001 में, कुल जनसंख्या 20,833,803 थी जिसमें पुरुष 10,474,218 थे जबकि महिलाएं 10,359,585 थीं।

शीर्ष जनसंख्या वृद्धि

1.	Kabirdham	40.71%
2.	Raipur	34.70%
3.	Bilaspur	33.29%
4.	Janjgir champa	22.94%
5.	Mahasamund	20.05%

सबसे बड़ा जिला (km^2)

1.	सरगुजा	15732
2.	रायपुर	12383
3.	बस्तर	10470
4.	दुर्गा	8535
5.	बीजापुर	8530

बच्चों का प्रतिशत

1.	कबीरधाम	17.25%
2.	नारायणपुर	16.71%
3.	बीजापुर	16.65%
4.	सरगुजा	16.12%
5.	बस्तर	15.33%

उच्च घनत्व

1.	जांजगीर चंपा	420
2.	दुर्ग	392
3.	रायपुर	328
4.	बिलासपुर	322
5.	महासमुंद	216

उच्च साक्षरता

1.	दुर्ग	79.06%
2.	धमतरी	78.36%
3.	राजनंदगांव	75.96%
4.	रायपुर	75.56%
5.	रायगढ़	73.26%

उच्च लिंग अनुपात

1.	बस्तर	1023
2.	दंतेवाड़ा	1020
3.	महासमुंद	1017
4.	राजनंदगांव	1015
5.	धमतरी	1010

छत्तीसगढ़ जनसंख्या वृद्धि दर

इस दशक में कुल जनसंख्या वृद्धि 22.61 प्रतिशत थी जबकि पिछले दशक में यह 18.06 प्रतिशत थी। 2011 में छत्तीसगढ़ की जनसंख्या भारत का 2.11 प्रतिशत है। 2001 में यह आंकड़ा 2.03 प्रतिशत था।

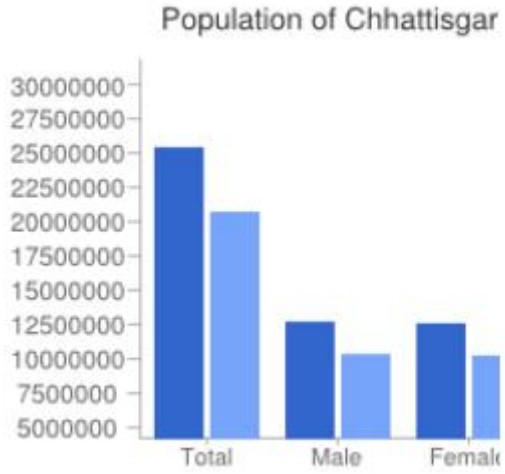

छत्तीसगढ़ साक्षरता दर 2011

छत्तीसगढ़ में साक्षरता दर में वृद्धि की प्रवृत्ति देखी गई है और 2011 की जनगणना के अनुसार 70.28 प्रतिशत है। इसमें पुरुष साक्षरता 80.27 प्रतिशत है जबकि महिला साक्षरता 59.58 प्रतिशत है। 2001 में, छत्तीसगढ़ में साक्षरता दर 64.66 प्रतिशत थी, जिसमें पुरुष और महिला क्रमशः 75.70 प्रतिशत और 55.73 प्रतिशत साक्षर थे। वास्तविक संख्या में, छत्तीसगढ़ में कुल साक्षर 15,379,922 है, जिसमें पुरुष 8,807,893 और महिलाएं 6,572,029 हैं।

छत्तीसगढ़ घनत्व 2011

छत्तीसगढ़ का कुल क्षेत्रफल 135,192 वर्ग km है। छत्तीसगढ़ का घनत्व 189 प्रति वर्ग किमी है जो राष्ट्रीय औसत 382 प्रति वर्ग km से कम है। 2001 में छत्तीसगढ़ का घनत्व 154 प्रति वर्ग km था, जबकि 2001 में राष्ट्र औसत 324 प्रति वर्ग km था।

छत्तीसगढ़ लिंग अनुपात

छत्तीसगढ़ में लिंगानुपात 991 है यानी प्रत्येक 1000 पुरुष के लिए, जो 2011 की जनगणना के अनुसार राष्ट्रीय औसत 940 से नीचे है। 2001 में, छत्तीसगढ़ में महिलाओं का लिंग अनुपात प्रति 1000 पुरुषों पर 990 था।

छत्तीसगढ़ धार्मिक डेटा

बहुत सारे दर्शक हमें छत्तीसगढ़ राज्य के धर्म का डेटा उपलब्ध कराने के लिए कह रहे हैं। सबसे महत्वपूर्ण सवाल यह है कि छत्तीसगढ़ राज्य में हिंदुओं, मुस्लिमों, सिखों और ईसाइयों की वर्तमान आबादी कितनी है। लेकिन भारत सरकार ने अभी तक छत्तीसगढ़ राज्य का पूर्ण धार्मिक डेटा जारी नहीं किया है। इसके जारी होने के बाद, हम छत्तीसगढ़ जनसंख्या जनगणना 2011 के इस पृष्ठ पर विस्तृत जानकारी प्रदान करेंगे।

अनुमानित जनसंख्या	2.56 करोड़	2.08 करोड़
वास्तविक जनसंख्या	25,545,198	20,833,803
पुरुष	12,832,895	10,474,218
महिला	12,712,303	10,359,585
जनसंख्या वृद्धि	22.61%	18.06%
कुल जनसंख्या का प्रतिशत	2.11%	2.03%
लिंग अनुपात	991	990
बाल लिंग अनुपात	969	868
घनत्व / km^2	189	154
घनत्व / mi^2	489	399

क्षेत्रफल km^2	135,192	135,191
क्षेत्र mi^2	52,198	52,198
कुल बाल जनसंख्या (0–6 आयु)	3,661,689	3,554,916
पुरुष जनसंख्या (0–6 आयु)	1,859,935	1,800,413
महिला जनसंख्या (0–6 आयु)	1,801,754	1,754,503
साक्षरता	70.28%	64.66%
पुरुष साक्षरता	80.27%	75.70%
महिला साक्षरता	59.58%	55.73%
कुल साक्षर	15,379,922	11,173,149
पुरुष साक्षर	8,807,893	6,711,395
महिला साक्षर	6,572,029	4,461,754

छत्तीसगढ़ शहरी जनसंख्या 2011

छत्तीसगढ़ की कुल जनसंख्या में से 23.24% लोग शहरी क्षेत्रों में रहते हैं। शहरी क्षेत्रों में रहने वाली जनसंख्या का कुल आंकड़ा 5,937,237 है, जिसमें 3,035,469 पुरुष हैं और शेष 2,901,768 महिलाएं हैं। पिछले 10 वर्षों में शहरी आबादी में 23.24 प्रतिशत की वृद्धि हुई है। छत्तीसगढ़ के शहरी क्षेत्रों में लिंग अनुपात प्रति 1000 पुरुषों पर 956 महिलाएं थीं। बच्चों के लिए (0–6) लिंगानुपात शहरी क्षेत्र में प्रति 1000 लड़कों पर 937 लड़कियों का था। छत्तीसगढ़ के शहरी क्षेत्रों में रहने वाले कुल बच्चे (0–6 आयु) 736,748 थे। शहरी क्षेत्र की कुल जनसंख्या में से 12.41% बच्चे (0–6) थे। छत्तीसगढ़ में शहरी क्षेत्रों में औसत साक्षरता दर 84.05 प्रतिशत थी जिसमें पुरुष 90.58% साक्षर थे जबकि महिला साक्षरता 73.39: थी। छत्तीसगढ़ के शहरी क्षेत्र में कुल साक्षर 4,370,966 थे।

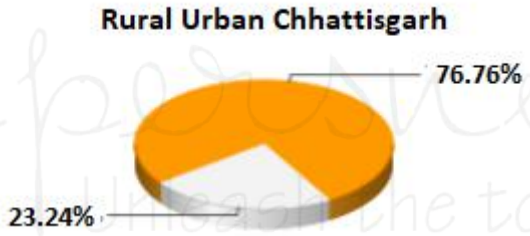

छत्तीसगढ़ ग्रामीण जनसंख्या 2011

छत्तीसगढ़ राज्य की कुल जनसंख्या में से लगभग 76.76 प्रतिशत ग्रामीण क्षेत्रों के गांवों में रहते हैं। वास्तविक संख्या में पुरुषों और महिलाओं की संख्या क्रमशः 9,797,426 और 9,810,535 थी। छत्तीसगढ़ राज्य के ग्रामीण क्षेत्रों की कुल जनसंख्या 19,607,961 थी। इस दशक (2001–2011) में दर्ज की गई जनसंख्या वृद्धि दर 76.76% थी। छत्तीसगढ़ राज्य के ग्रामीण क्षेत्रों में, प्रति 1000 पुरुषों पर महिला लिंगानुपात 1001 था जबकि बच्चे के लिए (0–6 आयु) प्रति 1000 लड़कों पर 977 लड़कियां थीं। छत्तीसगढ़ में 2,924,941 बच्चे (0–6) ग्रामीण क्षेत्रों में रहते हैं। कुल ग्रामीण आबादी का 14.92 प्रतिशत बच्चों की आबादी 76.98 प्रतिशत और 55.15 प्रतिशत है। छत्तीसगढ़ में ग्रामीण क्षेत्रों की औसत साक्षरता दर 65.99 प्रतिशत थी। ग्रामीण क्षेत्रों में कुल साक्षर 11,008,956 थे।

जनसंख्या(%)	76.76%	23.24%
कुल जनसंख्या	19,607,961	5,937,237
पुरुष जनसंख्या	9,797,426	3,035,469
महिला जनसंख्या	9,810,535	2,901,768
जनसंख्या वृद्धि	17.78%	41.84%

लिंग अनुपात	1001	956
बाल लिंग अनुपात (0–6)	977	937
बाल जनसंख्या (0–6)	2,924,941	736,748
बाल प्रतिशत (0–6)	14.92%	12.41%
साक्षरों	11,008,956	4,370,966
औसत साक्षरता	65.99%	84.05%
पुरुष साक्षरता	76.98%	90.58%
महिला साक्षरता	55.15%	73.39%

छत्तीसगढ़ किस तरह से महिलाओं को शिक्षित और सशक्त बना रहा है

शिक्षा वह नींव है जिस पर हम अपने भविष्य का निर्माण करते हैं। युवा राज्य होने के बावजूद छत्तीसगढ़ में युवाओं की शिक्षा पर विशेष बल देने की दूरदर्शिता रही है। यह आज हम राज्य के चारों ओर प्रगति की लंबी प्रगति में स्पष्ट है – चाहे वह राज्य भर में कई नए शैक्षणिक संस्थान बन रहे हों या उच्च राज्य साक्षरता दर। सरकार महिला शिक्षा पर ध्यान केंद्रित कर शिक्षा में लैंगिक असमानता को खत्म करने की दिशा में भी काम कर रही है। ऐसे समय में जब प्रधान मंत्री नरेंद्र मोदी ने राष्ट्र से 'बेटी पढ़ाओ–बेटी बचाओ' मिशन की दिशा में काम करने का आग्रह किया है, छत्तीसगढ़ भारत का पहला राज्य था जिसने स्नातक तक सभी लड़कियों के लिए शिक्षा मुफ्त की।

महिला शिक्षा के प्रति लोगों की सदियों पुरानी रूढ़िवादी मानसिकता के अलावा, छत्तीसगढ़ के प्रशासन को नक्सल गतिविधि के डर से भी जूझना पड़ा है, जो एक अन्य प्रमुख कारक है जो माता–पिता को अपने बच्चों को स्कूल भेजने से रोकता है। इस स्थिति को सुधारने के लिए, राज्य सरकार ने लड़कियों को सशक्त बनाने में मदद करने के लिए डिज़ाइन की गई योजनाओं और पहलों को शुरू करने को प्राथमिकता दी है।

1. सरस्वती साइकिल योजना

यह एक प्रोत्साहन योजना है जिसे छत्तीसगढ़ सरकार द्वारा 2004–05 में शुरू किया गया था। इसका उद्देश्य स्कूलों में लड़कियों के नामांकन को बढ़ावा देना और 14–18 वर्ष आयु वर्ग में स्कूल छोड़ने की दर को कम करना है। इस योजना के तहत, अनुसूचित जाति/अनुसूचित जनजाति/BPL/आदिवासी समूहों की इस आयु वर्ग की सभी लड़कियों को मुफ्त में साइकिल प्रदान की जाती है ताकि वे आसानी से अपने स्कूल से आने–जाने के लिए यात्रा कर सकें।

इस पहल ने निश्चित रूप से लाभांश का भुगतान किया है। अब लड़कियां समूहों में स्कूल से आती–जाती हैं, जो विशेष रूप से नक्सल प्रभावित क्षेत्रों में उनके परिवारों की सुरक्षा चिंताओं को दूर करती है। इससे हाई स्कूल में लड़कियों के बीच ड्रॉपआउट दर में भारी कमी आई है।

सबसे बुरी तरह प्रभावित दस जिलों में 2007 से 2012 के बीच 4,37,799 लड़कियां इस योजना से लाभान्वित हुई हैं। नामांकन संख्या 2006–07 में 5,436 से बढ़कर 2011–12 में 11,876 हो गई है। इसी अवधि के दौरान ड्रॉपआउट दर 3% से घटकर 0.9% हो गई है।

2. कस्तूरबा गांधी बालिका विद्यालय

2004 में शुरू की गई एक केंद्र सरकार की योजना, इसका उद्देश्य देश के शैक्षिक रूप से पिछड़े ब्लॉकों में समाज के कमजोर वर्गों के लिए आवासीय बालिका विद्यालय चलाना है। ये वे क्षेत्र हैं जहां राष्ट्रीय औसत (46.13%) की तुलना में कम महिला साक्षरता अनुपात और राष्ट्रीय औसत (21.59%) की तुलना में साक्षरता में उच्च लिंग अंतर है।

यह छत्तीसगढ़ जैसे राज्य के लिए विशेष रूप से सहायक है जहां 40% से अधिक आबादी SC/ST/OBC/आदिवासी है और उसे नक्सल विद्रोह की अतिरिक्त चुनौती का सामना करना पड़ता है।

3. संचार क्रांति योजना (CG-SKY)

यह देश की सबसे बड़ी मोबाइल वितरण योजना है। इसके तहत छत्तीसगढ़ सरकार की ओर से करीब 45 लाख महिलाओं को मोबाइल मुहैया कराए जाएंगे. राज्य सरकार की ओर से कॉलेज स्तर पर छात्रों को 5 लाख फोन बांटे जाएंगे.। इससे सहभागी शासन, महिला सशक्तिकरण और वित्तीय समावेशन को बढ़ावा मिलेगा। महिला स्वयं सहायता समूहों को नए बाजार आसानी से मिल जाएंगे और उन्हें वित्तीय आजादी मिलेगी। यह सूचनाओं की एक पूरी नई दुनिया भी खोलेगा जो निस्संदेह लड़कियों के बीच डिजिटल साक्षरता में सुधार करने में मदद करेगी। इन मोबाइल फोनों का वितरण अभी चल रहा है।

4. दंतेवाड़ा एजुकेशन सिटी

किसी समय में सबसे कम साक्षरता दर 42: वाला भारतीय जिला दंतेवाड़ा आज 150 एकड़ के क्षेत्र में फैले एक एजुकेशन सिटी और ₹100 करोड़ के बजट के साथ फलता–फूलता है। यह सब 2011 में शुरू हुआ जब राज्य सरकार ने शहर का उद्घाटन किया।

एजुकेशन सिटी में बालिकाओं की जरूरतों को पूरा करने वाले कई संस्थान हैं। इनमें एक कस्तूरबा गांधी विद्यालय, आदिवासी लड़कियों के लिए एक विशेष स्कूल और ज़रूरतमंदों को मुफ्त शिक्षा प्रदान करने वाले कई कॉलेज शामिल हैं। एक विशेष सक्षम स्कूल में, वर्तमान में 85 विकलांग लड़कियां शिक्षा प्राप्त कर रही हैं जो उन्हें अपने लिए एक आशाजनक भविष्य बनाने में सक्षम बनाती हैं। दुनिया की सबसे बड़ी ऑडिट फर्मों में से एक ज़च्डळ ने दंतेवाड़ा के एजुकेशन सिटी को दुनिया की शीर्ष 100 शहरी बुनियादी ढांचा परियोजनाओं में सूचीबद्ध किया है।

5. मुख्यमंत्री स्वालंबन योजना

यह योजना महिलाओं को आत्मनिर्भर बनाने के लिए उन्हें पेशेवर प्रशिक्षण प्रदान करती है। इस योजना से 4,854 से अधिक महिलाएं लाभान्वित हुई हैं। इसके अलावा छत्तीसगढ़ महिला कोष की ऋण योजना ने 2003–04 से 32,855 महिला स्वयं सहायता समूहों को ₹68 करोड़ से अधिक का ऋण प्रदान किया है।

6. पॉलिटेक्निक संस्थान

तकनीकी कौशल और जानकारी के निर्माण में पॉलिटेक्निक संस्थान बड़ी भूमिका निभाते हैं। छत्तीसगढ़ सरकार इस बात से अच्छी तरह वाकिफ है, क्योंकि उसने पहले ही राज्य भर में चार बालिका पॉलिटेक्निक संस्थान स्थापित कर लिए हैं। इसके अलावा, राज्य के प्रत्येक जिले में पहले से ही कम से कम एक पॉलिटेक्निक कॉलेज है। 2003–04 में, 61 सरकारी ITI 6,664 प्रशिक्षुओं को पूरा कर रहे थे, 2017–18 तक ITI की संख्या तीन गुना बढ़कर 178 हो गई है और 25,589 प्रशिक्षुओं को दिमागी रूप से प्रशिक्षित कर रहे हैं। ऐसा प्रत्येक संस्थान छात्रों को पेशेवर प्रशिक्षण प्रदान करता है, यह सुनिश्चित करता है कि उनके पास कौशल है जो उन्हें रोजगार हासिल करने में मदद कर सकता है।

7. महिला समाख्या योजना

यह एक MHRD योजना है जिसका उद्देश्य ग्रामीण क्षेत्रों में महिलाओं को शिक्षित और सशक्त बनाना है, विशेष रूप से सामाजिक और आर्थिक रूप से हाशिए के समूहों की महिलाओं को। इसका उद्देश्य उनके आत्म–सम्मान और आत्मविश्वास को बढ़ाना, गंभीर रूप से सोचने की क्षमता विकसित करना, विकास प्रक्रियाओं में समान भागीदारी सुनिश्चित करना और उन्हें ऐसे कौशल प्रदान करना है जो उन्हें आर्थिक रूप से स्वतंत्र बनने की अनुमति दें।

प्रमुख औद्योगिक क्षेत्र

छत्तीसगढ़ भारत के सबसे युवा और सबसे तेजी से बढ़ते राज्यों में से एक है, जो व्यापार और विकास के लिए अपार अवसर प्रदान करता है। व्यवसाय विकास के लिए महत्वपूर्ण कारकों द्वारा संचालित, अर्थात सुशासन, आवश्यक बुनियादी ढाँचा, बिजली के अधिशेष के साथ युग्मित, एक स्थिर श्रम वातावरण, प्रतिभा पूल, प्रचुर खनिज संसाधन और विविध वन उपज – सभी छत्तीसगढ़ को एक प्रमुख व्यावसायिक गंतव्य बनाते हैं।

खनिजों और धातुओं की उपलब्धता

खनिज संपदा के मामले में छत्तीसगढ़ भारत के सबसे धनी राज्यों में शुमार है। यह 205 खानों में फैले हीरे सहित प्रमुख खनिजों की 28 किस्मों के लिए अच्छी तरह से जाना जाता है। 2014–15 में 9.8% हिस्सेदारी के साथ छत्तीसगढ़ भारत में प्रमुख खनिज उत्पादन के मूल्य के मामले में पांचवें स्थान पर है

- भारत के टिन अयस्क भंडार के 36 प्रतिशत के लिए जिम्मेदार, छत्तीसगढ़ एकमात्र राज्य है जो भारत में टिन केंद्रित करता है।
- 2014–15 में कोयला, टिन और डोलोमाइट उत्पादन में छत्तीसगढ़ भारत में पहले स्थान पर था। देश के हीरे और डोलोमाइट के भंडार में राज्य का हिस्सा क्रमशः 4% और 36.5% है।

राज्य के प्रमुख औद्योगिक क्षेत्र हैं :

रायपुर क्षेत्र

- खनिज, चूना पत्थर और कोयले के समृद्ध भंडार रायपुर जिले को राज्य के प्रमुख औद्योगिक केंद्रों में से एक बनाते हैं
- नया रायपुर शहर प्रशासनिक राज्य की राजधानी है और सरकार का शहर को एक नए विश्व स्तरीय राजधानी शहर के रूप में विकसित करने का प्रस्ताव है
- रायपुर में मोनेट इस्पात, जिंदल, सेंचुरी सीमेंट, लाफार्ज, अंबुजा सीमेंट, अल्ट्राटेक सीमेंट जैसे प्रमुख खिलाड़ियों के साथ 158 बड़े और मध्यम स्तर के उद्योग हैं।

बिलासपुर क्षेत्र

- इस क्षेत्र में साउथ ईस्टर्न कोलफील्ड्स लिमिटेड की उपस्थिति ने क्षेत्र में सहायक औद्योगिक इकाइयों के लिए संपन्न संचालन सुनिश्चित किया है।
- 338 हेक्टेयर में फैला सिरगिट्टी औद्योगिक विकास केंद्र इस क्षेत्र में स्थित है
- बिलासपुर SEC रेलवे ज़ोन का जोनल मुख्यालय भी है, जो भारत में सबसे अधिक लाभदायक रेलवे ज़ोन में से एक है, जो भारतीय रेलवे के राजस्व में लगभग 17% का योगदान देता है।

कोरबा क्षेत्र

- भारत की शक्ति राजधानी के रूप में जाना जाता है, इस क्षेत्र में कोयले और बॉक्साइट के समृद्ध भंडार हैं
- रायपुर हवाई अड्डे से 200 किमी बिलासपुर से जुड़ा हुआ है।
- इस क्षेत्र में मौजूद प्रमुख उद्योग खनन (कोयला और बॉक्साइट), बिजली उत्पादन और एल्यूमीनियम उत्पादन के क्षेत्रों में काम करते हैं।

दुर्ग–भिलाई क्षेत्र

- खनिज भंडार में समृद्ध, विशेष रूप से लौह अयस्क, चूना पत्थर और क्वार्टजाइट
- सड़क मार्ग से अच्छी तरह जुड़ा हुआ है और रायपुर हवाई अड्डे से 50 km दूर है
- इस क्षेत्र में स्थित प्रमुख खिलाड़ियों में भिलाई स्टील प्लांट स्टील अथॉरिटी ऑफ इंडिया (SAIL) और ACC शामिल हैं
- 397 हेक्टेयर में फैला बोरई औद्योगिक विकास केंद्र एक प्रमुख औद्योगिक क्षेत्र है

बिजली की उपलब्धता

- छत्तीसगढ़ को एक बिजली अधिशेष राज्य के रूप में स्वीकार किया जाता है। यह बिजली में आत्मनिर्भर है और पूरे राज्य में निर्बाध 24.7 बिजली आपूर्ति सुनिश्चित करता है। छत्तीसगढ़ में कोरबा जिले को भारत की शक्ति राजधानी के रूप में जाना जाता है।
- छत्तीसगढ़ के बड़े कोयला भंडार बिजली उत्पादन के लिए एक बड़ा अवसर प्रस्तुत करते हैं।

- अगस्त 2015 तक छत्तीसगढ़ में स्थापित बिजली क्षमता 13,728.39 मेगावाट थी। स्थापित क्षमता का 33% राज्य और केंद्र सरकार का है और शेष 67% निजी कंपनियों के स्वामित्व में है।
- 12वीं पंचवर्षीय योजना (2012–17) में राज्य सरकार की योजना बिजली उत्पादन क्षमता को बढ़ाकर 30,000 मेगावाट करने की है।
- छत्तीसगढ़ में बिजली की दर राष्ट्रीय औसत से काफी कम है।
- बिजली सरप्लस राज्य होने के कारण छत्तीसगढ़ सीमेंट, एल्युमीनियम, लोहा जैसे उच्च बिजली खपत करने वाले उद्योगों के लिए एक आदर्श स्थान है।
- निर्बाध गुणवत्ता वाली बिजली आपूर्ति के साथ, राज्य IT/ITS इलेक्ट्रॉनिक्स और अन्य विनिर्माण केंद्रित क्षेत्रों जैसे कई फोकस क्षेत्रों के लिए एक आकर्षक बिजली टैरिफ स्लैब प्रदान करता है।

संयोजकता

देश में केंद्रीय रूप से स्थित, छत्तीसगढ़ क्षेत्रीय लॉजिस्टिक्स हब के साथ–साथ पड़ोस में विशाल उपभोक्ता बाजारों तक पहुंच के दृष्टिकोण से लाभ उठाने के लिए स्थानीय लाभ प्रदान करता है। ब्च्छब्ब् द्वारा नया रायपुर में 40 हेक्टेयर क्षेत्र में एक नया एकीकृत कंटेनर डिपो (ICD) विकसित किया जा रहा है। यह रायपुर में मौजूदा ICD के अतिरिक्त होगा और राज्य से प्रत्यक्ष निर्यात को और बढ़ावा देगा।

हवाई संयोजकता

- रायपुर में स्वामी विवेकानंद हवाई अड्डा 2012–13 और 2013–14 में गैर–मेट्रो श्रेणी में भारत में सर्वश्रेष्ठ हवाई अड्डे के लिए राष्ट्रीय पर्यटन पुरस्कार प्राप्तकर्ता रहा है।
- रायपुर हवाई अड्डे ने 2014–15 में 0.93 मिलियन यात्रियों को प्राप्त किया और 8,000 से अधिक उड़ानों को संभाला। अंतरराष्ट्रीय उड़ानें शुरू होने से छत्तीसगढ़ के साथ संपर्क बढ़ेगा।
- छत्तीसगढ़ सरकार के साथ साझेदारी में बिलासपुर और रायगढ़ में नागरिक हवाई अड्डों की स्थापना के लिए सहमत हुए भारतीय विमानपत्तन प्राधिकरण (AAI) के साथ राज्य के मौजूदा हवाई संपर्क में दो अतिरिक्त हवाई अड्डे शामिल होंगे। इसके अलावा, जगदलपुर में एक नया ग्रीन फील्ड नागरिक हवाई अड्डा प्रस्तावित है।
- छत्तीसगढ़ में भिलाई, बिलासपुर, कोरबा, रायगढ़, जगदलपुर, अंबिकापुर, जशपुर और सारंगढ़ क्षेत्रों में स्थित आठ हवाई पट्टी हैं।

सड़क संयोजकता

- कुल सड़क नेटवर्क का 35,241 ाउ।
- 12 राष्ट्रीय राजमार्गों के साथ 2,289 ाउ का राजमार्ग नेटवर्क।
- एशियाई विकास बैंक से वार्षिकी/BOT/ऋण के आधार पर 2018 तक 2.34 बिलियन अमरीकी डालर के निवेश के साथ अतिरिक्त 3,000 km सड़क नेटवर्क का निर्माण।

रेल संयोजकता

- भारत के रेल भाड़े में सबसे अधिक योगदानकर्ता– कुल राष्ट्रीय माल भाड़ा राजस्व का छठा हिस्सा है।
- राज्य में 1,187 km का मौजूदा रेल नेटवर्क है। राज्य SPV के माध्यम से अतिरिक्त 546 km रेल लाइन की योजना है।
- राज्य चेन्नई, कोलकाता, मुंबई, नई दिल्ली, अहमदाबाद, इलाहाबाद, बेंगलुरु, कोचीन, पुणे और हैदराबाद सहित देश के लगभग सभी प्रमुख शहरों से निर्बाध रूप से जुड़ा हुआ है।

अतिरिक्त स्थानीय लाभ

- भारतीय उपमहाद्वीप के भूकंपीय रूप से सबसे सुरक्षित क्षेत्र में स्थित है।
- किसी भी शत्रुतापूर्ण अंतरराष्ट्रीय सीमा से काफी दूर।
- सात सीमावर्ती राज्यों में लगभग 500 मिलियन (भारत की आबादी का लगभग 40%) की संचयी आबादी के संभावित बाजार तक पहुंच, जो भारत के सकल घरेलू उत्पाद में 38ः का योगदान देता है।
- रायपुर से लगभग 500 km दूर विजाग बंदरगाह के माध्यम से एशियाई बाजारों (सिंगापुर, चीन, कोरिया और जापान) को निर्यात के साथ मध्य भारत के लिए एक रसद केंद्र बनने की क्षमता।

कृषि में समृद्ध

- भारत के चावल के कटोरे के रूप में जाना जाता है, छत्तीसगढ़ कृषि में समृद्ध है, इसके 135 लाख हेक्टेयर क्षेत्र में 43% खेती के अधीन है।
- चावल राज्य की प्रमुख फसल है जो कुल फसल क्षेत्र का 66% है।
- दलहन, तिलहन और बागवानी शेष फसल क्षेत्र में क्रमशः 17%, 5% और 2% पर कब्जा कर लेते हैं।
- छत्तीसगढ़ मक्का, अनाज, दालों का भी प्रमुख उत्पादक है।
- छत्तीसगढ़ देश में उत्पादित कुल पपीते का 6% उत्पादन करता है। इसके अतिरिक्त, यह हल्दी, अदरक, अमरूद, टमाटर, बैंगन, भिंडी, मटर और गोभी जैसे बागवानी उत्पादों का एक प्रमुख योगदानकर्ता है।
- छत्तीसगढ़ में मक्का उत्पादन 2012–13 में 0.23 मिलियन मीट्रिक टन से बढ़कर 2014–15 में 0.75 मिलियन मीट्रिक टन हो गया।
- 2008 और 2014 के बीच छत्तीसगढ़ में फलों और सब्जियों का उत्पादन दोगुना हो गया। इसके अतिरिक्त, इसी अवधि के दौरान फलों और सब्जियों की फसलों के क्षेत्र में क्रमशः 61% और 36% की दर से वृद्धि हुई।
- छत्तीसगढ़ ने वर्ष 2014–15 में 0.64 मिलियन मीट्रिक टन मसालों का उत्पादन किया। राज्य में उत्पादित प्रमुख मसाले जैसे मिर्च, अदरक और हल्दी छत्तीसगढ़ में उत्पादित कुल मसालों का लगभग 78% है।
- छत्तीसगढ़ ने 2014–15 के दौरान 47,000 मीट्रिक टन फूलों का उत्पादन किया। गेंदे की किस्म में कुल फूलों की उपज का 57% हिस्सा होता है, इसके बाद हैप्पीओली और ट्यूबरोज में से प्रत्येक में 12% की दर से होता है।
- राज्य की 76 कोल्ड स्टोरेज इकाइयों में खराब होने वाली कृषि उपज के लिए 0.38 मिलियन मीट्रिक टन की क्षमता है।
- 2014–15 में मछली बीज उत्पादन और अंतर्देशीय मछली उत्पादन में छत्तीसगढ़ देश में छठे स्थान पर है। छत्तीसगढ़ सालाना 1.1 मिलियन मीट्रिक टन दूध का उत्पादन करता है। राज्य में दूध की खपत 2020 तक 3.7 मिलियन मीट्रिक टन तक पहुंचने का अनुमान है।
- बढ़ती जनसंख्या, बढ़ती प्रति व्यक्ति आय, रोजगार की उच्च दर और राज्य में लोगों की तेजी से बदलती भोजन की आदतें और जीवन शैली राज्य में कृषि और खाद्य प्रसंस्करण क्षेत्र में विकास को गति दे रही है।

व्यापार करने की कम लागत

पूंजी लागत

- भूमि की कम लागत
- स्टील और सीमेंट के प्रतिस्पर्धी मूल्य निर्धारण के कारण निर्माण की कम लागत
- कच्चे माल की कम लागत (धातु)
- वित्तीय प्रोत्साहन